हिन्दी पाक्षिक

महानगर स्तंभ

RNI NO. RAJHIN/2017/70561

पृष्ठ संख्या.... 2

❒ वर्ष-9 ❒ अंक-2 जयपुर, बुधवार 15 जनवरी, 2025 ❒ एक प्रति 5 रुपये ❒ कुल पृष्ठ-4

आध्यात्म, आस्था और आधुनिकता का संगम महाकुम्भ

आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है कुम्भ। ज्ञान, चेतना और उसका परस्पर मंथन कुम्भ मेले का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के खींच कर ले आता है। कुम्भ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं शुरू हुआ था अपितु इसका इतिहास समय के प्रवाह के साथ स्वयं ही बनता चला गया। विशालतम् कुम्भ मेला संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने का महा आयोजन है।

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ कलश है। यहाँ 'कलश' का सम्बन्ध अमृत कलश से है। बात उस समय की है जब देवासुर संग्राम के बाद दोनों पक्ष समुद्र मंथन को राजी हुए थे। मथना था समुद्र तो मथनी और नेति भी उसी हिसाब की चाहिए थी। ऐसे में मंदराचल पर्वत मथनी बना और नागवासुकि उसकी नेति। मंथन से चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई जिन्हें परस्पर बाँट लिया गया परन्तु जब धन्वन्तरि ने अमृत कलश देवताओं को दे दिया तो फिर युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। तब भगवान् विष्णु ने स्वयं मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की बात कही और अमृत कलश का दायित्व इंद्र-पुत्र जयंत को सौपा। अमृत-कलश को प्राप्त कर जब जयंत दानवों से अमृत की रक्षा हेतु जा रहे थे तभी इसी क्रम में अमृत की बूंदे पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिरी- हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज। चूँकि विष्णु की आज्ञा से सूर्य, चन्द्र, शनि एवं बृहस्पति भी अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे और विभिन्न राशियों (सिंह, कुम्भ एवं मेष) में विचरण के कारण ये सभी कुम्भ पर्व के द्योतक बन गये। इस प्रकार ग्रहों एवं राशियों की सहभागिता के कारण कुम्भ पर्व ज्योतिष का पर्व भी बन गया। जयंत को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लगा था और माना जाता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है। यही कारण है कि कालान्तर में वर्णित स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुम्भ मेले का आयोजन होने लगा।

ज्योतिष गणना के क्रम में कुम्भ का आयोजन चार प्रकार से माना गया है

प्रथम, बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में गंगा-तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। द्वितीय, बृहस्पति के मेष राशि चक्र में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर अमावस्या के दिन प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है। तृतीय, बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में गोदावरी तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है एवं चतुर्थ, बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में शिप्रा तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।

धार्मिकता एवं ग्रह-दशा के साथ-साथ कुम्भ पर्व को तत्त्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, जिससे कुम्भ की उपयोगिता सिद्ध होती है। कुम्भ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्त्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है। प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है। कहा भी गया है यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे अर्थात जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इस लिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है-कुम्भ, और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का प्रसाद है।

महाकुम्भ का अर्थ

महाकुम्भ मेला, एक पवित्र समागम है जो हर बारह वर्षों में होता है, यह लाखों लोगों का एक जनसमूह ही नहीं है, यह एक आध्यात्मिक यात्रा है, जो मानव अस्तित्व के मूल में उतरती है। प्राचीन हिंदू पौराणिक कथाओं में उल्लिखित, महाकुम्भ मेला एक गहन आंतरिक अर्थ रखता है, जो आत्मबोध, शुद्धीकरण और आध्यात्मिक प्रबोधन की शाश्वत खोज की प्रतीकात्मक यात्रा के रूप में अभिव्यक्त होता है।

शेष पृष्ठ 3 पर....

कुम्भ का प्रतीकात्मक अर्थ:

महाकुम्भ मेले के केंद्र में एक प्रतीक है जो ब्रह्मांडीय महत्त्व से भरा हुआ है, कुम्भ या पवित्र कलश। यह कलश, प्रतीकात्मकता से भरा हुआ, अपनी भौतिक रूपरेखा से परे जाकर मानव शरीर और आध्यात्मिक जागरण की खोज को मूर्त रूप देता है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, कुम्भ उस दिव्य पात्र का प्रतीक है जो समुद्र मंथन के दौरान निकला था, जिसमें अमृत नामक दिव्य पेय था। रूपक रूप में, महाकुम्भ मानव रूप का प्रतिनिधित्व करता है, और भीतर का अमृत प्रत्येक व्यक्ति की आध्यात्मिक सार का प्रतीक है। महाकुम्भ मेले की यात्रा, इसलिए, एक भौतिक यात्रा से अधिक है। यह आत्म-खोज की प्रतीकात्मक अन्वेषण है, प्रत्येक जीव में निहित चौतन्यता की मान्यता है।

महाकुम्भ मेला: एक जीवित विरासत और वैश्विक घटना

समकालीन युग में, कुम्भ मेला एक वैश्विक घटना का रूप ले चुका है, जो न केवल लाखों घरेलू तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है बल्कि अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों का भी ध्यानाकर्षण करने के साथ- साथ उन्हें धार्मिकता/आध्यात्मिकता के साथ जोड़ता है। वर्ष 2017 में यूनेस्को ने प्रयागराज में आयोजित होने वाले कुम्भ मेला को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता प्रदान किया, जिससे इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व में वृद्धि हुई। आज का कुम्भ मेला भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत की अभिव्यक्ति है। यह आधुनिकता के दौर में प्राचीन परम्पराओं के लचीलेपन का प्रमाण है। महाकुम्भ मेला का ऐतिहासिक विकास, प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक, इसकी अनुकूलन और फ्लने-फूलने की क्षमता को दर्शाता है, जो इसकी पवित्रता और आध्यात्मिक सार को संरक्षित करता है।

संपादकीय

नए वर्ष में बेहतर होगी आर्थिकी

नए वर्ष में भारतीय शेयर बाजार की राह कठिन नहीं होगी, शेयर बाजार को सर्वोच्च ऊंचाई पर पहुंचाने में घरेलू फंडों की अहम भूमिका होगी और कारपोरेट आय को बढ़ावा मिलेगा। हम उम्मीद करें कि नए वर्ष 2025 में सरकार के द्वारा आर्थिक और वित्तीय सुधारों, कृषि सुधारों, मेक इन इंडिया, निर्यात बढ़ाने और ग्रामीण क्षेत्रों की आमदनी बढ़ाने के रणनीतिक प्रयासों से देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगीज यकीनन वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संगठनों के द्वारा नए वर्ष 2025 की आर्थिक संभावनाओं पर प्रकाशित विभिन्न रिपोर्टों के मुताबिक नया वर्ष 2025 भारत के लिए उजली आर्थिक संभावनाओं वाला वर्ष होगा। नए वर्ष में भारतीय अर्थव्यवस्था बीते वर्ष 2024 से मिली आर्थिक और वित्तीय चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करते हुए आगे बढ़ेगी और दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में रेखांकित होगी। यदि हम नए वर्ष 2025 को बीते वर्ष 2024 से मिलने वाली आर्थिक विरासत को देखें तो पाते हैं कि इस विरासत में जहां कई चुनौतियां हैं, वहीं विकास के कई मजबूत आर्थिक आधार भी हैं। यद्यपि बीते वर्ष 2024 की शुरुआत 8 फीसदी विकास दर के साथ हुई थी, लेकिन बीते वर्ष की जुलाई से सितंबर की तिमाही में महज 5.4 फीसदी की विकास दर के कारण कई आर्थिक गणित गडबड़ा गए। बीते वर्ष में भारत के आर्थिक परिदृश्य पर प्रमुखतया महंगाई तथा रोजगार चिंताजनक मुद्दे रहे हैं। महंगाई के मोर्चे पर मुश्किलें लगभग अधिकांश महीनों में बनी रहीं। खासतौर से नवंबर 2024 के बाद एक बार फिर थोक एवं खुदरा महंगाई बढने लगी और महंगाई रिजर्व बैंक के निर्धारित दायरे से बाहर रही। बीते वर्ष में यद्यपि शहरी बेरोजगारी में कमी आई, लेकिन असंगठित सेक्टर में रोजगार के मौके घट गए। बीते वर्ष में विदेश व्यापार घाटा भी बढ़ा। बीते हुए वर्ष में रुपया वर्षभर लुढ़कता रहा।वर्षभर डॉलर की तुलना में रुपए की कीमत घटती गई और दिसंबर 2024 में डॉलर के मुकाबले रुपया लुढ़ककर 85 से भी नीचे के स्तर पर पहुंच गया। वर्ष 2024 में देश के विदेशी मुद्रा भंडार में भी कभी कमी तो कभी वृद्धि होती रही। दिसंबर 2024 में विदेशी मुद्रा कोष घटते हुए करीब 652 अरब डॉलर के स्तर पर पहुंच गया। निश्चित रूप से नए वर्ष 2025 को पिछले बीते वर्ष से आर्थिक विकास के ठोस आधार भी मिले हैं।

गलताजी परिसर में विकास कार्यों से सुविधाओं में होगा इजाफा

जयपुर। जिला कलक्ट्रेट सभागार में 8 जनवरी को मंदिर ठिकाना गलता जी की प्रबंध व्यवस्थाओं एवं विकास कार्यों को लेकर समीक्षा बैठक का आयोजन हुआ। जिला कलक्टर एवं प्रशासक मंदिर ठिकाना गलता जी डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी की अध्यक्षता में आयोजित हुई बैठक में मंदिर ठिकाना गलताजी परिसर में सौंदर्यीकरण एवं विकास कार्यों पर चर्चा की गई।

बैठक में समीक्षा के दौरान नगर निगम के अतिरिक्त आयुक्त हैरिटेज ने जानकारी दी कि 11.94 करोड़ रुपये की लागत से मंदिर ठिकाना गलता जी के जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यकरण के विभिन्न विकास कार्य करवाये जा रहे हैं। मुख्य रूप से कोबल स्टोन कार्य, नाला कम पार्किंग का कार्य, स्वागत द्वार, गेन्ट्री बोर्ड, बाहरी दीवारों पर कड़ा, खमीरा कार्य, रेड सेंड कार्य, पत्थर की जालिया, सेल्फी पॉइंट, सड़क कार्य, दीवार ऊँची करने का कार्य एवं प्लास्टर का कार्य प्रगतिरत जिसे शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिये गये है। जनाना कुण्ड के आस-पास के क्षेत्र में सघन हरियाली हेतु वन विभाग को निर्देश दिये, गलता परिसर में शिलापट्टों पर गलता तीर्थ के इतिहास का हिन्दी व अंग्रेजी में वर्णन हेतु पुरातत्व विभाग को निर्देशित किया गया।

नगर निगम जयपुर-हेरिटेज को गलता जी में आने वाले दर्शनार्थियों के वाहनों की पार्किंग के लिये स्थान चिन्हीकरण व मापदंड के संबंध में आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश प्रदान किये गये। नगर निगम हेरिटेज को मंदिर ठिकाना गलता जी में विकास कार्यों को जल्द से जल्द पूर्ण करने एवं मुख्य द्वार का काम 15-20 दिवस में पूरा करने हेतु हिदायत दी गई। साथ ही वर्चुअल गेट विकसित करने हेतु भी निर्देशित किया गया। जिला कलक्टर एवं प्रशासक महोदय द्वारा गलता परिसर में विशेष सफाई अभियान जनवरी तृतीय/चतुर्थ सप्ताह में चलाने का निर्णय लेते हुये सामाजिक संस्थाओं स्कूलों आदि का सहयोग लेने के निर्देश दिये गये। साथ ही गलता परिसर के सम्पूर्ण क्षेत्र में वृक्षारोपण करने हेतु वन विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये। इसके साथ ही जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा गलता जी से घाट के बालाजी तक हेरिटेज पोल लगातर सुन्दर व आकर्षक लाइट लगाई जावें, घाट के बालाजी से गलता जी तक पैदल आने-जाने हेतु पाथवे विकसित करने के निर्देश दिये गये।

राज्यपाल बागडे की ओर से अजमेर में ख्वाजा साहब की दरगाह पर चादर पेश

जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे की ओर से 9 जनवरी को अजमेर में गरीब नवाज ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर चादर पेश की गई। अजमेर दरगाह पहुंचने पर राज्यपाल की ओर से जियारत कर चादर चढ़ाई गई। राज्यपाल के परिसहाय प्रवीण नायक और उप सचिव मुकेश कलाल ने चादर पेश की। सालाना उर्स के अवसर पर राज्यपाल बागडे का संदेश भी पढ़कर सुनाया गया। अपने संदेश में बागडे ने ख्वाजा मोईनुद्दीन हसन चिश्ती के अमन और मोहब्बत के पैगाम को जन-जन तक पहुंचाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि ख्वाजा साहब का उर्स विविधता में एकता की भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। उन्होंने भारत को संत-महात्माओं और पीर पैगम्बरों के जीवन मूल्यों से जुड़ी संस्कृति का बताते हुए उनके सद्भाव के विचारों के लिए सभी को मिलकर कार्य करने पर जोर दिया।

पतंगबाजी के बाद आतिशबाजी से दिवाली सी रौनक

जयपुर। राजस्थान में मंगलवार को मकर संक्रांति मनाई गई। जयपुर, सीकर समेत कई जिलों में लोगों ने पतंगबाजी का जमकर लुत्फ उठाया। जयपुर में दिनभर पतंगबाजी के बाद शाम को आसमान लैंटर्न (लालटेन) उड़ाने और आतिशबाजी से जगमगा उठा। लैंटर्न (लालटेन) आसमान में छोड़ कर देश-प्रदेश में खुशहाली की कामना की गई। जयपुर की छोटी चौपड़ और हवा महल पर आतिशबाजी का ड्रोन से नजारा देखने लायक था।

स्वामी विवेकानंद को किया याद

जयपुर। हर वर्ष की भाँति स्वामी विवेकानंद की जयंती के उपलक्ष्य में 10 जनवरी को बनी पार्क स्थित जिला एवं सत्र न्यायालय जयपुर महानगर द्वितीय भवन के कॉरिडोर में जयंती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। रामअवतार भारतीय के अनुसार कार्यक्रम में वक्ताओं ने स्वामी विवेकानन्द के जीवन मूल्यों पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम में अधिकारीगण, कर्मचारीगण तथा अधिवक्तागण मौजूद रहे।

सोलहवीं राजस्थान विधान सभा का तृतीय सत्र शुक्रवार 31 जनवरी से

जयपुर। सोलहवीं राजस्थान विधान सभा का तृतीय सत्र 31 जनवरी से आरम्भ होगा। विधान सभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने 8 जनवरी को विधान सभा सत्र की तैयारियों की जानकारी ली। देवनानी ने सत्र से संबंधित आवश्यक निर्देश विधान सभा के अधिकारियों को दिये। देवनानी ने बताया कि 31 जनवरी को प्रातः 11 बजे राज्यपाल हरिभाऊ बागडे अभिभाषण देने के लिये विधान सभा पहुँचेंगे। विधान सभा पहुँचने पर अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, सदन के नेता एवं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, संसदीय कार्य मंत्री जोगाराम पटेल और विधान सभा के प्रमुख सचिव भारत भूषण शर्मा राज्यपाल बागडे का स्वागत करेंगें। राज्यपाल को विधान सभा में आरएसी बटालियन द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया जायेगा। राज्यपाल को प्रेसेशन के साथ सदन में ले जाया जायेगा। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे द्वारा 31 जनवरी को प्रात 11 बजे आहूत किये गये सोलहवीं राजस्थान विधान सभा के तृतीय सत्र की अधिसूचना विधान सभा के प्रमुख सचिव भारत भूषण शर्मा द्वारा 08 जनवरी को जारी की गई।

'वेटरन्स डे' पूर्व सैनिकों और परिजनों के राष्ट्र समर्पण के प्रति कृतज्ञता पर्वः राज्यपाल

जयपुर(नि.सं.)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने सशस्त्र सेना सम्मान दिवस वेटरन्स डे को पूर्व सैनिकों और उनके परिजनों के त्याग, बलिदान और राष्ट्र समर्पण के प्रति कृतज्ञता पर्व कहा है। उन्होंने कहा कि हम सभी को चाहिए कि राष्ट्र के लिए सर्वस्व अर्पित करने वाले पूर्व सैनिकों और उनके परिजनों के कल्याण के लिए कार्य करते उनकी सेवाओं का सम्मान करें। बागडे मंगलवार को सशस्त्र सेना भूतपूर्व सैनिक दिवस पर सेना के सशस्त्री प्रेक्षागृह में आयोजित समारोह में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने भारतीय सशस्त्र बलों के पहले भारतीय कमांडर-इन-चीफ फील्ड मार्शल के. एम. करियप्पा की सेवाओं को भी स्मरण किया। उन्होंने कहा कि सैनिक केवल अपने परिवार के बारे में नहीं सोचता बल्कि देश और समाज को सुरक्षित रखने की सदा चिंता करता है। उन्होंने सुप्रसिद्ध कवि माखनलाल चतुर्वेदी की पुष्प की अभिलाषा कविता की चर्चा करते हुए कहा कि सैनिक अपने लिए नहीं देश के लिए जीते हैं। उनका सब कुछ राष्ट्र के लिए होता है, इसलिए हमें भी उनके प्रति कृतज्ञ रहकर कार्य करने की सीख लेनी चाहिए।

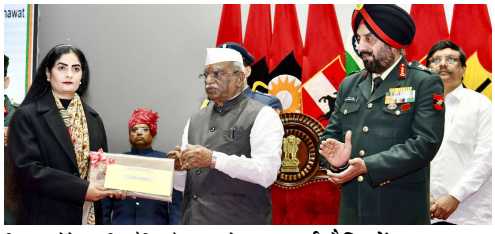

भूतपूर्व सैनिकों का सम्मान

इस अवसर पर राज्यपाल श्री बागडे ने देश लिए उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले राष्ट्र को दी सेवाओं के लिए भूतपूर्व सैनिकों, अधिकारियों, वीरांगनाओं, वीर माता-पिता एवं वीरता तथा विशिष्ट पदक धारकों को सम्मानित किया। आरंभ में राज्यपाल ने पूर्व सैनिकों की स्मृति में पुष्प चक्र अर्पित उन्हें श्रद्धांजलि दी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू-कश्मीर में सोनमर्ग सुरंग का उद्घाटन किया

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 13 जनवरी को जम्मू-कश्मीर में सोनमर्ग सुरंग का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने उन श्रमिकों का आभार व्यक्त किया. जिन्होंने जम्मू-कश्मीर और भारत के विकास के लिए कड़ी मेहनत की है और अपनी जान भी दांव पर लगाई है। मोदी ने कहा, चुनौतियों के बावजूद, हमारा संकल्प डगमगाया नहीं। उन्होंने मजदूरों के दृढ़ संकल्प और प्रतिबद्धता तथा काम पूरा करने के लिए सभी बाधाओं को पार करने के लिए उनकी सराहना की। उन्होंने 7 श्रमिकों की मौत पर भी शोक व्यक्त किया। मोदी ने इस बात पर रोशनी डाली कि इस सुरंग के बन जाने से सोनमर्ग, कारगिल और लेह में लोगों का जीवन काफी आसान हो जाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा कि सुरंग से हिमस्खलन, भारी बर्फबारी और भूस्खलन के दौरान होने वाली कठिनाइयों में कमी आएगी, जिसके कारण अक्सर सड़कें बंद हो जाती हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सुरंग से लोगों की प्रमुख अस्पतालों तक पहुंच बेहतर हो जाएगी और आवश्यक आपूर्ति की उपलब्धता सुनिश्चित होगी, जिससे निवासियों के सामने आने वाली चुनौतियों में कमी आएगी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि सोनमर्ग सुरंग का निर्माण 2015 में उनकी सरकार के सत्ता में आने के बाद शुरू हुआ था। उन्हें प्रसन्नता है कि सुरंग का निर्माण उनके शासन के तहत पूरा हुआ। उन्होंने कहा कि सुरंग से सर्दियों के मौसम में सोनमर्ग से संपर्क बना रहेगा और पूरे क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। प्रधानमंत्री ने इस बात पर बल दिया कि आने वाले दिनों में जम्मू-कश्मीर में कई सड़क और रेल संपर्क परियोजनाएं पूरी होने वाली हैं। प्रधानमंत्री ने पास में चल रही एक और बड़ी कनेक्टिविटी परियोजना का भी जिक्र किया और कश्मीर घाटी के लिए आगामी रेल संपर्क को लेकर उत्साह का उल्लेख किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सोनमर्ग जैसी 14 से अधिक सुरंगों का निर्माण किया जा रहा है, जिससे जम्मू-कश्मीर देश के सबसे अधिक जुड़े हुए क्षेत्रों में से एक बन गया है। इस कार्यक्रम में जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला, केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी, केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह और अजय टम्टा सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

पृष्ठभूमि

लगभग 12 किलोमीटर लंबी सोनमर्ग सुरंग परियोजना का निर्माण 2,700 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से किया गया है। इसमें 6.4 किलोमीटर लंबी सोनमर्ग मुख्य सुरंग, एक निकास सुरंग और एप्रोच रोड शामिल हैं। समुद्र तल से 8,650 फीट से अधिक की ऊंचाई पर स्थित यह परियोजना लेह के रास्ते में श्रीनगर और सोनमर्ग के बीच हर मौसम में कनेक्टिविटी को बेहतर करेगी, भूस्खलन और हिमस्खलन मार्गों को दरकिनार करेगी तथा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण लद्दाख क्षेत्र में सुरक्षित और निर्बाध पहुंच सुनिश्चित करेगी। यह सोनमर्ग को साल भर के गंतव्य में बदलकर पर्यटन को भी बढ़ावा देगी, जिससे शीतकालीन पर्यटन, एडवेंचर स्पोर्ट्स और स्थानीय आजीविका को बढ़ावा मिलेगा। जोजिला सुरंग के साथ, जिसे 2028 तक पूरा करने की योजना है, यह मार्ग की लंबाई को 49 किलोमीटर से घटाकर 43 किलोमीटर कर देगी और वाहनों की गति को 30 किलोमीटर प्रति घंटे से बढ़ाकर 70 किलोमीटर प्रति घंटे कर देगी, जिससे श्रीनगर घाटी और लद्दाख के बीच निर्बाध राष्ट्रीय राजमार्ग-1 संपर्क सुनिश्चित होगा। इस बेहतर कनेक्टिविटी से रक्षा रसद को बढ़ावा मिलेगा, जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में आर्थिक विकास तथा सामाजिक-सांस्कृतिक एकीकरण को बढ़ावा मिलेगा।

शेष पृष्ठ 1 का.....

आध्यात्म, आस्था और आधुनिकता का संगम महाकुम्भ

आस्था और विश्वास का मिलनः त्रिवेणी संगम

तीर्थराज प्रयाग की पुण्यभूमि पर माँ गंगा, यमुना एवं अदृश्य सरस्वती का मिलन ही त्रिवेणी संगम कहलाता है। कहते हैं जब गंगा एवं यमुना के संगम की बात चली तब गंगा जी ने यमुना जी से मिलने से मना कर दिया। किंवदंती के अनुसार गंगा जी यमुना जी के विशद क्षेत्र एवं गहराई से चिंतित थीं। उन्हें यह डर था कहीं यमुना जी से मिलने से उनका अस्तित्व न समाप्त हो जाए, इस पर यमुना जी हँस पड़ी और उन्होंने गंगा जी को आश्वस्त किया कि संगमोपरान्त गंगा जी ही पूर्ण-रूप से जानी जायेंगी। इस विषय में एक और कथा प्रचलित है कि जब सूर्य-सुता यमुना एवं गंगा के संगम की चर्चा हो रही थी तब गंगा जी ने यमुना जी के श्याम रंग के कारण उनसे मिलने से इनकार कर दिया था।

इस पर भगवान भास्कर अत्यधिक नाराज हुए और उन्होंने गंगा जी को कलयुग में मैला एवं मृत शरीर ढोने का शाप दे दिया। इस पर गंगा जी बहुत व्यथित हुयी, उन्होंने अपनी पीड़ा भगवान् विष्णु को बताई। विष्णु जी ने कहा कि वे भगवान् भास्कर का शाप तो नहीं लौटा सकते परन्तु यह वरदान देते हैं कि बिना गंगा के जल के कोई भी पुण्यकर्म पृथ्वी पर पूर्ण नहीं माना जायेगा। साथ ही उन्होंने यमुना जी को वरदान दिया कि तुम्हारा जल अक्षयवट के सम्पर्क में आते ही पापनाशक हो जायेगा। इसपर गंगा जी बहुत प्रसन्न हुईं एवं बोली अब यमुना जी के मिलन से मेरी महत्ता भी बढ़ जाएगी। सरस्वती जी भी अक्षयवट के महत्त्व को समझते हुए प्रभु आज्ञा से इस संगम में आ गईं। प्रयागराज के इस अद्वितीय त्रिवेणी संगम का महत्त्व इस कारण भी है कि ब्रह्मा जी ने यहाँ भगवान् शिव को इष्ट मान कर यज्ञ किया था, जिसकी रक्षा स्वयं भगवान् विष्णु माधव रूप में कर रहे थे। दूसरा, कालान्तर में इसे ही पृथ्वी का केंद्र भी माना गया है। ऐसे में तीर्थराज प्रयागराज एवं त्रिवेणी संगम का महत्त्व स्वतः ही अत्यधिक बढ़ जाता है। महाभारत में साठ करोड़ दस हजार तीर्थ प्रयाग में बताये गये हैं, जिनमें से अधिकांश तीर्थों का आधार संगम ही है। मान्यता है कि अधिकांश तीर्थ स्वयं गंगा जी एवं यमुना जी द्वारा लाये गये थे। पृथ्वी के जिस कण पर इनका जल पड़ता है वह स्थान स्वतः ही तीर्थ हो जाता है। सम्भवतः यही कारण है कि आदिकाल से जिस स्थान को ये धाराएँ पवित्र करती हैं, माघ माह में उसी पर संन्यासी आराधना करते हैं। चाहे वह महाकुम्भ का अवसर हो या कुम्भ मेले का अथवा हर साल लगने वाले माघ मेले का, उसी स्थान को आराधना के लिए उपयुक्त माना गया है जहाँ तक जल पहुंचा है। तीर्थ-स्थलों पर जिन क कर्मों स्नान, दान, ब्रह्मभोज, उपवास, परि मा का विधान है, वे सभी संगम पर अति-फलदायक होते हैं।

विभिन्न ग्रंथों में संगम स्नान का अलग-अलग महत्त्व बताया गया है। ब्रह्म पुराण के अनुसार संगम स्नान से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है तथा मत्स्य पुराण के अनुसार दस करोड़ तीर्थों का फल मिलता है। महाभारत के एक सूक्त में संगम में स्नान के फल स्वरुप प्राप्त पुण्य को राजसूय एवं अश्वमेध यज्ञों के पुण्यफल के बराबर बताया गया है। स्कन्द पुराण के काशी खण्ड में विभिन्न तिथियों पर स्नान के भी अलग अलग फल बताये गये हैं। जैसे अमावस्या पर स्नान करने से अन्य दिनों की अपेक्षा सौ गुणा अधिक फल प्राप्त होता है। सं ति में स्नान करने से हजार गुणा, सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के समय स्नान करने से सौ लाख गुणा। यदि सोमवार के दिन चन्द्र ग्रहण या रविवार को सूर्य ग्रहण पर स्नान किया जाए तो अपार पुण्यफल की प्राप्ति होती है। दान व समर्पण का महात्म्य स्वयं कृष्णप्रिया यमुना से परिलक्षित होता है, जो अपनी विशालता एवं अपने सर्वस्व को त्यागकर प्राणि मात्र के कल्याण के निमित्त गंगा में समाहित हो जाती हैं। यही त्याग और समर्पण ही संगम का मूल है, जैसा कि सम्राट हर्षवर्धन का दान अति-विशिष्ट एवं प्रसिद्ध है, वे प्रत्येक बारहवें वर्ष संगम तट पर लगने वाले कुम्भ में अपना सर्वस्व दान कर देते थे। साथ ही माघ मास के दौरान कल्पवासी आदिकाल से ही ब्रह्मभोज, उपवास एवं प्रयागराज में स्थित तीर्थों की परि मा करते आ रहे हैं। इन सब के साथ ही संगम पर मुण्डन का विधान है। मान्यता है कि संगम तट पर मुण्डन से अनेक विघ्न बाधाएं स्वतः ही दूर हो जाती हैं।

कलाग्राम में प्रदर्शित होगी गंगा अवतरण व कुम्भ की कहानी

उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 26 फरवरी, 2025 तक आयोजित होने वाला महाकुंभ एक ऐतिहासिक आयोजन होगा, जिसमें दुनिया भर से 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालु आएंगे। आध्यात्मिकता, परंपरा और सांस्कृतिक विरासत का यह पवित्र संगम एक बार फिर भारत की एकता और भक्ति की चिरस्थायी भावना की पुष्टि करेगा। यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के हिस्से के रूप में मान्यता प्राप्त महाकुंभ, केवल एक आयोजन नहीं है, बल्कि एक गहन अनुभव है जो सीमाओं को पार करता है और दुनिया भर के लोगों को एकजुट करता है। 4,000 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला यह मेला भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं और उन्नत संगठनात्मक क्षमताओं के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है। इसके केंद्र में शाही स्नान है, जो गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती के संगम पर किया जाने वाला एक अनुष्ठानिक स्नान है, जिसे पापों को धोने और आध्यात्मिक मुक्ति प्रदान करने वाला माना जाता है। ज्योतिषीय रूप से महत्वपूर्ण, महाकुंभ सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति से जुड़े दुर्लभ खगोलीय संरेखण द्वारा निर्धारित किया जाता है, जो भारत के प्राचीन ज्ञान की गहराई को दर्शाता है। पौराणिक कथाओं में निहित और लाखों लोगों द्वारा पूजी जाने वाली यह कालातीत परंपरा ब्रह्मांडीय शक्ति यों और मानवीय आध्यात्मिकता के बीच संबंध को रेखांकित करती है।

भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को उजागर करने के लिए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रयागराज में महाकुंभ 2025 में संगम की रेती पर विशेष सांस्कृतिक गांव कलाग्राम की स्थापना की गई है। 12 ज्योतिर्लिंगों के आकार में तैयार अनोखे कलाग्राम का उद्देश्य भारतीय लोक कला, संस्कृति और परंपराओं को जीवंत मंच प्रदान करना है।'' कलाग्राम, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित, नागावासुकी क्षेत्र में भारद्वाज रोड पर 10 एकड़ से अधिक में विस्तृत एक सांस्कृतिक स्थल है, जिसे शिल्प, व्यंजन एवं संस्कृति सहित देश की मूर्त एवं अमूर्त धरोहर के माध्यम से भारत की समृद्ध विरासत को संवर्धित करने, संरक्षित करने एवं प्रदर्शित करने के लिए निर्मित किया गया है। कलाग्राम महाकुंभ के दौरान श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का केंद्र बनेगा। इसमें विभिन्न राज्यों की लोक कलाएं, हस्तशिल्प, संगीत, नृत्य और प्रदर्शनियां प्रस्तुत की जाएंगी।

कला और संस्कृति की विविधता का परिचायक है कलाग्राम

कलाग्राम में देश भर के कोने-कोने से आए कलाकारों, शिल्पकारों एवं कलाविदों को उनकी असाधारण प्रतिभा एवं चिरकालिक परम्पराओं को प्रदर्शित करने के लिए एक ही छत के नीचे लाने का प्रयास किया गया है, जहां प्रदर्शन, दृश्य एवं साहित्यिक कलाओं के लिए एक ही स्थान पर मंच प्रदान किया गया है। महाकुम्भ के 45 दिनों में, कलाग्राम, गंगावतरण एवं समुद्र मंथन की कथा का वर्णन करने वाले अनुभव क्षेत्रों, महाकुम्भ के विभिन्न पहलुओं को समाहित करने वाले प्रदर्शनी क्षेत्रों, कारीगरों के कौशल, शास्त्रीय एवं लोक कलाकारों के मंत्रमुग्धकारी प्रदर्शन, सात्विक व्यंजनों की सुगन्ध, एवं यहाँ तक कि विशेष खगोल रात्रि के माध्यम से रात्रि के आकाश का अवलोकन करने के अवसर के माध्यम से एक गहन सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करेगा। यहां बच्चों, युवाओं के लिए सेल्फी पांइट भी बनाया गया हैं। 635 फीट चौड़े एवं 54 फीट ऊँचे मुख्य प्रवेश द्वार तैयार हैं, जो शिल्प कौशल का एक अद्भुत निर्माण है। 12 ज्योतिर्लिंगों के आकार में तैयार अनोखे कलाग्राम का उद्देश्य भारतीय लोक कला, संस्कृति और परंपराओं को जीवंत मंच प्रदान करना है। कलाग्राम मंच, चार धाम को अपनी पृष्ठभूमि के रूप में जीवन्त करता है। इसमें राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता कलाकारों द्वारा निर्मित दो विशाल पट्टचित्र माँ दुर्गा एवं गणपति की कथा का वर्णन किया गया है।

पर्यटन मंत्रालय ने महाकुंभ में कई अहम कदम उठाए

पर्यटन मंत्रालय ने महाकुंभ 2025 के अवसर का जश्न मनाने के लिए घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई कदम उठाए है। यह महाकुंभ दुनिया के सबसे बड़े और सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक समागमों में से एक है, जो हर 12 साल में भारत के चार स्थानों में से एक पर आयोजित किया जाता है। महाकुंभ -2025 उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 13 जनवरी शुरू हुआ है जो 26 फरवरी तक चलेगा। इसे पूर्ण कुंभ भी कहा जाता है। इस विशाल आयोजन में दुनिया भर से लाखों भक्तों, पर्यटकों और तीर्थयात्रियों के आने की उम्मीद है। पर्यटन मंत्रालय इस महाकुंभ में 5000 वर्ग फीट का विशाल अतुल्य भारत मंडप स्थापित कर, विदेशी पर्यटकों, विद्वानों, शोधकर्ताओं, फोटोग्राफरों, पत्रकारों, प्रवासी समुदाय, भारतीय प्रवासियों आदि को सुविधा प्रदान करेगा। यह मंडप आगंतुकों को एक अनूठा अनुभव प्रदान करेगा, जिसमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और कुंभ मेले के महत्व को दर्शाया जाएगा। इस मंडप में देखो अपना देश - लोगों की पसंद का सर्वेक्षण भी होगा, जिसमें आगंतुक भारत में अपने पसंदीदा पर्यटन स्थलों के लिए वोट कर सकेंगे।

इस महाकुंभ में शामिल होने वाले विदेशी पर्यटकों, प्रभावशाली हस्तियों, पत्रकारों और फोटोग्राफरों की विशिष्ट जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्यटन मंत्रालय ने एक समर्पित टोल-फ्री टूरिस्ट इन्फोलाइन (1800111363 या 1363) शुरू की है। अंग्रेजी और हिंदी के अलावा टोल फ्री इन्फोलाइन अब दस (10) अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं और तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगाली, असमिया और मराठी सहित भारतीय स्थानीय भाषाओं में भी कार्यरत है। यह सेवा अंतर्राष्ट्रीय आगंतुकों की भागीदारी को आसान और अधिक सुखद बनाने के लिए सहायता, सूचना और मार्गदर्शन प्रदान करेगी।

आईटीडीसी ने प्रयागराज के टेंट सिटी में 80 लग्जरी आवास बनाए हैं, जबकि आईआरसीटीसी तीर्थयात्रियों और पर्यटकों के लिए लग्जरी टेंट भी उपलब्ध करा रहा है। पर्यटकों के लिए निर्बाध यात्रा सुनिश्चित करने के लिए पर्यटन मंत्रालय ने देश के कई शहरों से प्रयागराज तक हवाई सेवाएं बढ़ाने के लिए एलायंस एयर के साथ साझेदारी की है। इससे घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय श्रद्धालुओं के लिए महाकुंभ में आना-जाना आसान हो जाएगा। पर्यटन मंत्रालय महाकुंभ की भव्यता और आध्यात्मिक तत्व को कैमरे में कैद करने के लिए बड़े पैमाने पर फोटोशूट और वीडियोग्राफी परियोजना शुरू करेगा। इन दृश्यों को अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय मीडिया प्लेटफॉर्म पर व्यापक रूप से साझा किया जाएगा, जिससे महाकुंभ की भव्यता का प्रदर्शन होगा।

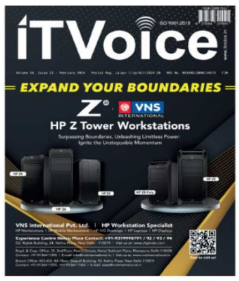

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक तरूण कुमार टांक के लिये महारानी प्रिन्टर्स प्लाट नं. 17, माँ वैष्णो देवी नगर, कालवाड़ रोड, जयपुर से मुद्रित एवं 52/121, वीरतेजाजी रोड, मानसरोवर, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। सम्पादक-तरूण कुमार टांक Email: mahanagarstambh@gmail.com